भगतसिंह ने कहा

"लोगों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिए वर्ग-चेतना की जरूरत है। गरीब मेहनतकश व किसानों को स्पष्ट समझा देना चाहिए कि तुम्हारे असली दुश्मन – पूंजीपति हैं, इसलिए तुम्हें इनके हथकंडों से बचकर रहना चाहिए और इनके हत्थे चढ़ कुछ न करना चाहिए। संसार के सभी गरीबों के, चाहे वे किसी भी जाति, रंग, धर्म या राष्ट्र के हों, अधिकार एक ही हैं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम धर्म, रंग, नस्ल और राष्ट्रीयता व देश के भेदभाव मिटाकर एकजुट हो जाओ और सरकार की ताकत अपने हाथ में लेने का यत्न करो। इन यत्नों में तुम्हारा नुकसान कुछ नहीं होगा, इससे किसी दिन तुम्हारी जंजीरें कट जायेंगी और तुम्हें आर्थिक स्वतंत्रता मिलेगी।"

"... श्रम- विभाजन हमारे सामने इस बात की पहली मिसाल पेश करता है कि जब मनुष्य स्वतः स्फूर्त समाज में रहता है, अर्थात जब तक विशेष तथा सामान्य हित के बीच दरार मौजूद रहती है और इसलिए जब तक क्रियाकलाप स्वैच्छिक रूप से नहीं बल्कि नैसर्गिक रूप से विभक्त रहता है, मनुष्य का अपना कार्य उसके ही विरुद्ध ऐसी विजातीय शक्ति बन जाता है, जो उसके नियंत्रण में होने की जगह उसे दास बनाती है।"

– कार्ल मार्क्स

(जर्मन विचारधारा)

शहीदे आज़म भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु और गणेशशंकर विद्यार्थी के शहादत दिवस (23 मार्च) पर

भगत सिंह सुखदेव राजगुरु

"सभी देशों को आजाद करवाने वाले वहां के विद्यार्थी और नौजवान हुआ करते हैं क्या हिन्दुस्तान के नौजवान अलग-अलग रहकर अपना और अपने देश का अस्तित्व बचा पायेंगे? नौजवान 1919 में विद्यार्थियों पर किये गये अत्याचार भूल नहीं सकेते। वे पढ़े। जरूर पढ़े। साथ ही पालिटिक्स का भी ज्ञान हासिल करें और जब जरूरत हो तो मैदान में कूद पड़ें और अपना जीवन इसी काम में लगा दें। अपने प्राणों का इसी में उत्सर्ग कर दें। वरन बचने का कोई उपाय नजर नहीं आता।"

(विद्यार्थी और राजनीति ('करती' पत्रिका में प्रकाशित जून 1928) लेख से)

शहीदे आज़म भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु और गणेशशंकर विद्यार्थी के शहादत दिवस पर

"भारतीय रिपब्लिक के नौजवानों नहीं सिपाहियों कतारबद्ध हो जाओ। आराम के साथ न खड़े रहो और न ही निरर्थक कदमताल किये जाओ। लम्बी दरिद्रता को, जो तुम्हें नाकारा कर रही है, सदा के लिए उतार फेंको। तुम्हारा बहुत ही नेक मिशन हैं देश के हर कोने और हर दिशा में बिखर जाओ और भावी क्रान्ति के लिए, जिसका आना निश्चित है, लोगों को तैयार करो। फर्ज के बिगुल की आवाज सुनो। वैसे ही खाली जिन्दगी न गंवाओ। बढ़ो, तुम्हारी जिन्दगी का हर पल इस तरह के तरीके और तरतीब ढूंढ़ने में लगना चाहिए कि कैसे अपनी पुरातन धरती की आंखों में ज्वाला जागे और यह एक लम्बी अंगड़ाई लेकर जाग उठे।... तब एक भयानक भूचाल आयेगा, जो बड़े धमाके से गलत चीजों को नष्ट कर देगा और साम्राज्यवाद के महल को कुचलकर धूल में मिलादेगा और यह तबाही महान होगी।"

(हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन के घोषणापत्र से)